



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोसी क्षेत्र : आर्थिक समस्याओं के विरुद्ध अवसरों की एक तलाश

अजय कुमार

सहायक प्राचार्य (अर्थशास्त्र विभाग)

बी. एस. एस कॉलेज सुपौल

भूपेन्द्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

(abstract) सार

कोसी क्षेत्र हमारे देश भारत के उत्तर पूर्व भाग एवं नेपाल के तराई क्षेत्र में स्थित है। इस यह क्षेत्र हिमालय की तलहटी से गंगा के मैदानी भाग तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र का नाम यहाँ की मुख्य नदी कोसी के नाम पर प्रचलित है। कोसी नदी हिमालय से निकल भारत नेपाल सीमा पार कर बिहार के कई जिलों से गुजरती हुई गंगा में मिल जाती है। बाढ़ के दौरान कोसी नदी के विशाल मैदानी भाग में जल भराव हो जाता है, जिससे व्यापक पैमाने पर कृषि भूमि और जन जीवन प्रभावित होते हैं। परंतु यह भी सत्य है की कोसी नदी मीठे जल का अथाह भंडार है और यह देश के पीने के पानी के समस्या का एक सम्पूर्ण समाधान हो सकता है, साथ ही यह खेतों के लिए उर्वर मिट्टी लाती है जो यहाँ के उपज को पोषित करता है। कोसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है यहाँ की उपजाऊ मिट्टी विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए उपयुक्त है जिसमें गेहूं, धान, मक्का, गन्ना, पटसन प्रमुख है इसके अलावा सब्जी और फल उत्पादन भी यहाँ की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जब हम कोसी क्षेत्र की बात करते हैं, तो हमलोग मुख्यतया बात कर रहे होते हैं सहरसा, सुपौल, मधेपुरा जिले की, यह क्षेत्र बिहार राज्य के नेपाल सीमा से सटे जिले हैं जिस कारण इन जिलों का आर्थिक और सामरिक महत्व भी है। यही वो जिले हैं जो भविष्य में बिहार व भारत के विकास यात्रा को उड़ान दे पाएंगे अतः आवश्यक है, यहाँ आधारभूत संरचना अच्छी स्थिति में हो। जिससे यहाँ का औद्योगिक क्षेत्र पर्याप्त विकास कर पाए।

शब्द कुंजी :- कोसी , तराई क्षेत्र , पोखरी , खाद्य उत्पादन , जूट उद्योग , चीनी उद्योग , चमड़ा उद्योग , डेयरी उद्योग , अल्कोहल उद्योग , कागज उद्योग , एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग , जल भराव , , बाढ़ , सूखा , टूरिज़्म

कोसी क्षेत्र हमारे देश भारत के उत्तर पूर्व भाग एवं नेपाल के तराई क्षेत्र में स्थित है। इस यह क्षेत्र हिमालय की तलहटी से गंगा के मैदानी भाग तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र का नाम यहाँ की मुख्य नदी कोसी के नाम पर प्रचलित है। कोसी नदी हिमालय से निकल भारत नेपाल सीमा पार कर बिहार के कई जिलों से गुजरती हुई गंगा में मिल जाती है। कोसी नदी यहाँ कई धाराओं में बहती है जिनके कई क्षेत्रीय उपनाम हैं इन धाराओं की विशेषता मार्ग परिवर्तन और व्यापक जल प्रवाह है जो बाढ़ का कारण बनती है, यह नदी इस क्षेत्र ही नहीं पूर्ण बिहार का शोक कहलाती है क्योंकि हर वर्ष यह बाढ़ लाती है और बिहार में हाहाकार मच जाता है। बाढ़ के दौरान कोसी नदी के विशाल मैदानी भाग में जल भराव हो जाता है, जिससे व्यापक पैमाने पर कृषि भूमि और जन जीवन प्रभावित होते हैं। परंतु यह भी सत्य है की कोसी नदी मीठे जल का अथाह भंडार है और यह देश के पीने के पानी के समस्या का एक सम्पूर्ण समाधान हो सकता है, साथ ही यह खेतों के लिए उर्वर मिट्टी लाती है जो यहाँ के उपज को पोषित करता है। कोसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है यहाँ की उपजाऊ मिट्टी विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए उपयुक्त है जिसमें गेहूं , धान , मक्का , गन्ना , पटसन प्रमुख है इसके अलावा सब्जी और फल उत्पादन भी यहाँ की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बस आवश्यकता है कोसी के जल के कुशल प्रबंधन की , इसके निमित्त कोसी परियोजना जैसी योजनाएँ चलाई गई लेकिन यह समस्या का पूर्ण समाधान अबतक नहीं कर पाया है। समतल भूमि क्षेत्र एवं कोसी नदी के रूप में मीठे जल का भंडार यहाँ की पूंजी है। जल प्रबंधन द्वारा कोसी क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि भी लाई जा सकेगी इससे जहाँ एक ओर सूखे क्षेत्र इससे लाभान्वित होंगे वहीं कोसी क्षेत्र उसके बदले आय प्राप्त करेगा ,रोजगार सृजन होगा एवं अन्य सकारात्मक आर्थिक प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। भारत के लिए यह क्षेत्र आर्थिक महत्व का तो है ही यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों के लिए जीवन दाई साबित होगा। यह क्षेत्र भारत नेपाल सीमा के कारण सामरिक महत्व का भी है साथ ही यहाँ की सांस्कृतिक विरासत जिसे मैथिल संस्कृति के नाम से जाना जाता है बहुत ही प्राचीन व मिठास भरी शैली के कारण बहुत ही महत्व का है यहाँ के जीवन शैली में पाग , (एक विशेष तरह का पगरी जिसे सिर पर धारण किया जाता है) पान , मछली और मखाना का विशेष स्थान है। इस क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से एक कहावत है :-

पग पग पोखरी माछ (मछली) मखान ,
मधुर बोल मुस्की मुख पान ।

यह कहावत कोसी के मैथिली संस्कृति की विशेषता को बयान करती है जिसका कारण मुख्य रूप से यहाँ की जल संपत्ति है परंतु धीरे धीरे जैसे जैसे जनसंख्या बढ़ रही है अब धीरे धीरे पोखर की संख्या घट रही है जिसका नकारात्मक प्रभाव माछ और मखान उत्पादन पर दिखता है।

“कोसी प्रमंडल का सृजन दिनांक 02.01.1972 को हुआ है। जिसका प्रशासनिक मुख्यालय सहरसा जिला है। यह मिथिला क्षेत्र के अंतर्गत 25.88°N एवं 86.6°E में अवस्थित है। इसकी चौहद्दी उत्तर में हिमालय (नेपाल), दक्षिण में बागमती नदी, पूर्व में सुरसर नदी तथा पश्चिम में कोसी नदी है। स्थापना काल में कोसी प्रमंडल सहरसा में सहरसा, पूर्णिया और कटिहार जिला थे। कालांतर में नये जिलों का गठन एवं प्रशासनिक व्यवस्था के कारण पूर्णिया प्रमंडल का गठन किया गया जिसमें कोसी प्रमंडल, सहरसा के पूर्णिया और कटिहार जिले को पूर्णिया प्रमंडल में शामिल कर लिया गया। वर्तमान में कोसी प्रमंडल, सहरसा में तीन जिले क्रमशः सहरसा, सुपौल और मधेपुरा रह गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कोसी प्रमंडल की कुल जनसंख्या 1,21,20,117 है। कोसी प्रमंडल की मुख्य सांस्कृतिक विशेषता यहाँ की चार वस्तुओं क्रमशः पान, पाग, माछ (मछली) और मखाना को माना जाता है। यह क्षेत्र मखाना की खेती के लिए भी प्रसिद्ध है। उग्रतारा शक्तिपीठ, महिषी, सूर्य मंदिर, कन्दाहा, वाणेश्वर महादेव मंदिर, बनगाँव, मटेश्वर मंदिर, कांठो, संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं कुटी, सिंहेश्वर शिव मंदिर सहित कई अन्य धार्मिक, पुरातात्विक एवं दर्शनीय स्थल में अवस्थित है।” 1

इस प्रकार सपस्ट है कि कोसी की अर्थव्यवस्था एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था है जो बाढ़ व अन्य कारणों से समुचित विकास नहीं कर पाई है, एक नजर डालते हैं कोसी की अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र व उनके विकासात्मक पहलू और समस्याओं पर।

कोसी के प्राथमिक क्षेत्र की समस्याएं व अवसर :-

प्राथमिक क्षेत्र से अभिप्राय कृषि एवम सम्बंधित क्रिया कलाप जैसे पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन आदि से होता है जिसमें इनका उत्पादन, विपणन व वितरण कार्य है। यह क्षेत्र खाद्य उत्पादन का स्रोत है और जैसा कि विदित है विकासशील देशों में खाद्य उत्पादन में त्वरित वृद्धि आवश्यक होती है क्योंकि आर्थिक विकास के दौरान इन देशों में खाद्यान्नों की माँग में दो कारणों से वृद्धि होती है – एक तो जनसंख्या में वृद्धि व नगरीकरण की तीव्र प्रवृत्ति दूसरा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि। बढ़ती हुई तीव्र जनसंख्या के खाद्यान्न माँग को केवल प्राथमिक क्षेत्र ही पूरा कर सकती है। खाद्यान्नों की पूर्ति में कमी उनका मूल्य बढ़ाती है, जिसके कारण अर्थव्यवस्था में अस्थिरता आती है। यह क्षेत्र रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत व सृजक है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग इस क्षेत्र में कार्य करता है। उद्योग व सेवा क्षेत्र में रोजगार अवसरों के सृजन हेतु अधिक पूंजी की आवश्यकता पड़ती है और यह विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में सुलभ नहीं होता है। इसके उलट प्राथमिक क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम पूंजी की आवश्यकता होती है। परंतु इस क्षेत्र में छुपी हुई बेरोजगारी एवं मौसमी बेरोजगारी की बहुलता है। कोसी क्षेत्र के पास एक तरफ उर्वर भूमि व पर्याप्त जल संसाधन है, जो नदियों तालाबों आदि के रूप में उपलब्ध है जिसका दोहन उन्नत तकनीक की मदद से कृषि एवं संबंधित क्रिया कलापों यथा मछली पालन मुर्गी पालन मधुमक्खी पालन आदि के लिए की जानी चाहिए। वर्तमान में अधिकतर जगहों पर पारंपरिक तकनीक व विधियों से जहाँ खेती होती है वही बहुत सारे किसान उन पुराने फसल कि किस्मों पर निवेश करते हैं जो वे स्वयं अपने घर में स्वाभिमान के साथ प्रयोग नहीं कर पाते। उदाहरण स्वरूप कोसी क्षेत्र में उत्पादन किए जाने वाले धान के फसल की कुछ पारंपरिक किस्में जिसे किसान खुद के खाने में भी प्रयोग कम ही करते हैं। यह क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र के लिए कच्चे माल का आपूर्ति

करने वाला भी होता है अर्थात कृषि निर्भर उद्योगों की संपन्नता कृषि क्षेत्र की संपन्नता पर निर्भर करती है इस श्रेणी में बहुत से उद्योग आते हैं जैसे – सूती वस्त्र उद्योग , जूट उद्योग , चीनी उद्योग , चमड़ा उद्योग , तंबाकू उद्योग , चाय कॉफी उद्योग , अल्कोहल उद्योग , कागज उद्योग , डेयरी उद्योग , खाद्य प्रसंस्करण उद्योग आदि । कोसी क्षेत्र इनमे से जूट उद्योग , चीनी उद्योग , चमड़ा उद्योग , डेयरी उद्योग , अल्कोहल उद्योग , कागज उद्योग , एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को प्रत्यक्ष रूप से कच्चे माल की आपूर्ति करता है । यह क्षेत्र अपना योगदान निर्यात संरचना में देकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के विकास में योगदान देता है । विकासशील देश के अर्थव्यवस्थाओं के निर्यात संरचना में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान महत्वपूर्ण होता है । प्राथमिक क्षेत्र का विकास आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय बाजार का प्रसार करता है । प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादन को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचा जा सकता है । इसके फलस्वरूप विदेशी पूंजी का स्वदेश में प्रवाह होता है जिससे सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को गति मिलती है । कोसी क्षेत्र भारतीय निर्यात संरचना में मखाना उद्योग , पशु धन से संबंधित उद्योग , व कृषि उत्पादों के माध्यम से संभवतः अपना योगदान देता है ।

प्राथमिक क्षेत्र के समस्याओं की बात करें तो-

कृषि साख की स-समय व पर्याप्त मात्रा में अनुपलब्धता यहाँ के किसानों की प्रमुख समस्या रही है जिस प्रकार युद्ध में सफलता के लिए गोला बारूद की आवश्यकता होती है उसी प्रकार कृषि में सफलता अर्थात अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है । पूंजी उत्पादन का अपरिहार्य साधन है । इस क्षेत्र के कृषक निर्धन हैं । इसलिए उनके लिए साख का महत्व और बढ़ जाता है । उनकी अधिकांश पूंजी उसकी भूमि तथा पशु संपदा में लगी रहती है इसलिए उन्हें ऋण का सहारा लेना पड़ता है ।

तकनीकी पिछड़ापन व जोत का छोटा आकार इस क्षेत्र में किसानों के पास छोटे छोटे भूखंड पाए जाते हैं जिस कारण ये आर्थिक जोत की सुविधा या लाभ से वंचित होते हैं और इन्हें कृषि कार्य करने के लिए भी पुरानी तकनीक का सहारा लेना पड़ता है ।

प्रच्छन्न बेरोजगारी, प्राकृतिक आपदाएं, विपणन समस्याएं, भंडारण की समस्या आदि प्रमुख हैं, इन समस्याओं के न्यूनीकरण पर सरकार को युद्धस्तर पर कार्य करना होगा . जिस के तहत कृषि का आधुनिकीकरण समय-समय पर किसानों का रजिस्ट्रेशन व प्रशिक्षण जिससे किसान आधुनिक तकनीक तक अपनी पहुँच बना सकें । अतिरिक्त कार्य बल का संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे पशुपालन मधुमक्खीपालन, आदि कार्य की ओर उन्मुखीकरण कर कृषि कार्य से दबाव कम किया जा सकेगा । पर्याप्त भंडारण सुविधाओं का स्थानीय स्तर पर विकास और उस से रजिस्टर्ड किसानों की सदस्यता जिससे उन्हें अपने फसल का सही व उचित कीमत प्राप्त हो सके । एम.एस.पी. पर किसानों के फसल की स- समय खरीद जिससे किसान को अनावश्यक रूप से भंडारण का जोखिम न लेना पड़े । जीविका परियोजना के तर्ज पर अन्य स्वयं सहायता समूह का निर्माण क्रेडिट लिंकेज या वित्तपोषण किया जाए के साथ-साथ खेतिहर मजदूरों का चाहे वह खेतिहर हो या अन्य उनके कुशलता व अकुशलता या अनुभव के आधार पर रजिस्ट्रेशन किया जाए जिससे उन्हें अन्य क्षेत्रों में भी नियोजित आवश्यकता अनुसार किया जा सके ।

जहां तक प्राकृतिक आपदा (बाढ़ व सूखा) का प्रश्न है नदी जोड़ो परियोजना की सफलता सर्वश्रेष्ठ हल हो सकता है साथ ही विभिन्न बांधों का ऊँचीकरण व उनका सिंचाई व पनबिजली उत्पादन में उन्नत तकनीक की मदद से उपयोग में लाना श्रेयकर होगा . वर्तमान में बिहार के जी .एस .डी .पी .में इस प्राथमिक क्षेत्र का योगदान लगभग 20 % है परन्तु बिहार के कुल कार्यशील जनसंख्या का 56 % व्यस्त है ।

कोसी के द्वितीयक क्षेत्र की समस्याएं व अवसर :-

द्वितीयक क्षेत्र से अभिप्राय औद्योगिक क्षेत्र से है . खनिज संसाधनों के अभाव के कारण वृहत उद्योग तो बिहार में नाम मात्र के ही हैं, सूक्ष्म लघु व मध्यम उद्योग भी विभिन्न तकनीकी, प्रबंधन व विभिन्न विपणन समस्याओं से त्रस्त है । बिहार इस क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ है बिहार की कुल जी. डी. पी में इस क्षेत्र का योगदान मात्र 20% (2021-22) है ।

क्षेत्र	बिहार की जी. डी. पी में योगदान (2021-22)
प्राथमिक क्षेत्र	20%
द्वितीयक क्षेत्र	20%
तृतीयक क्षेत्र	60%

स्रोत (२) - विकीपीडिया (बिहार बजट विश्लेषण 2022-23)

क्षेत्र	श्रम शक्ति (2015)
प्राथमिक क्षेत्र	56%
द्वितीयक क्षेत्र	8%
तृतीयक क्षेत्र	36%

स्रोत (3) - विकीपीडिया (बिहार बजट विश्लेषण 2016 - 17)

इस क्षेत्र के समुचित विकास के लिए जहां आधुनिक तकनीक के साथ-साथ बैकवर्ड व फॉरवर्ड लिंकेज की सुविधा सुनिश्चित करनी होगी वहीं क्षेत्रीय विशेषताओं दक्षताओं का ध्यान रखते हुए स्थानीय उद्योगों को जैसे करघा उद्योग , शक्कर उद्योग, पटसन उद्योग, रेशम उद्योग , खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, व विभिन्न कृषि आधारित उद्योग आदि के उत्पादों को मूल्य प्रतियोगी बनाने हेतु आवश्यक सभी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी , जिससे यह उद्योग मुख्य धारा में आकर जहां रोजगार सृजक बने वहीं ' मेक इन इंडिया ' में अपना अधिकतम योगदान सुनिश्चित कर सके । नए उद्योगों के सृजन हेतु एक तरफ जहां निवेशकों को आमंत्रित किया जाए वहीं आवश्यक आधार-भूत संरचना का विकास किया जा सकता है । जिसमे प्रमुख है जल संसाधन का विकास जो ना सिर्फ कृषि आवश्यकता है बल्कि घरेलू और औद्योगिक आवश्यकता भी है , ऊर्जा संसाधन का विकास , शक्ति संसाधन का विकास , परिवहन व्यवस्था का विकास , संचार व्यवस्था का विकास , बैंकिंग व्यवस्था का विकास , शिक्षा का प्रसार , और स्वास्थ्य सुविधा का विकास आदि हैं । यहाँ पारंपरिक व्यवसाय का

आधुनिकीकरण कर बहुतों उद्योग की संभावनाएं हैं जैसे बहुत सारे हस्त शिल्प आधारित उद्योग हो सकते हैं जिसके कारीगर हरेक गाँव में उपलब्ध हैं और आज के आधुनिक दौर में इनकी कला लुप्त हो रही है जिसके संरक्षण के लिए भी यह आवश्यक है। साथ ही बाँस आधारित शिल्प की यहाँ एक अलग पहचान है जो आज इस क्षेत्र में एक विशेष जाति तक ही सीमित है इसके आधुनिकीकरण और इसे उद्योग का रूप देकर जहाँ इन जाति विशेष को समृद्ध किया जा सकता है वही अन्य जाति के लोग भी इस तरफ आकर्षित होंगे। जिस तरह मधुबनी पेंटिंग को स्थान व पहचान मिला है उसी तरह इन कार्यों को भी वैश्विक पहचान मिल सकता है।

उपरोक्त के अलावा कोसी क्षेत्र के पास मीठे जल का कभी न खत्म होने वाला स्रोत है जो यहाँ एक आपदा के रूप में है जरूरत और आवश्यकता है इसे भी एक अवसर के रूप में परिवर्तित करने की। यहाँ के पानी को सूखा ग्रस्त क्षेत्र और अन्य शहरों व देश को निर्यात किया जा सकता है जिससे आर्थिक समृद्धि आएगी। हाल ही में दिल्ली की जल मंत्री जल के लिए आमरण अनशन पर थी क्या कोसी क्षेत्र का पानी जो यहाँ आपदा बना हुआ है हम उसे पाइप लाइन से दिल्ली को बेच नहीं सकते? अगर हाँ तो इस दिशा में सिर्फ दिल्ली ही क्यों राजस्थान, दक्षिण के बहुत सारे राज्य व विदेशों को भी जल की आवश्यकता है इस दिशा में कार्य होना चाहिए और इसे एक उद्योग का रूप देना चाहिए।

उरोक्त के अलावा विभिन्न धार्मिक स्थलों के कारण टूरिज्म उद्योग तो बेहतर संभावनाओं के साथ है ही, जिसके विकास की दिशा में कार्य किया जा सकता है।

कोसी के तृतीयक क्षेत्र की समस्याएं व अवसर :-

बिहार की अर्थव्यवस्था सेवा क्षेत्र उन्मुख अर्थव्यवस्था है जिसका बिहार के जी.डी.पी. में योगदान सर्वाधिक लगभग 60% है। टूरिज्म बिहार में एक बेहतर संभावना के साथ है। जरूरत है हॉटस्पॉट पर आधारभूत संरचना जैसे हॉटस्पॉट सौंदर्यीकरण, विश्वस्तरीय होटल व भोजन की व्यवस्था कराने की तथा उसके वैश्विक प्रचार-प्रसार की। कोसी नदी के किनारों का सौंदर्यीकरण कर पिकनिक हॉटस्पॉट में परिवर्तित किया जा सकता है। उग्रतारा शक्तिपीठ, महिषी, सूर्य मंदिर, कन्दाहा, वाणेश्वर महादेव मंदिर, बनगाँव, मटेश्वर मंदिर, कांठो, संत लक्ष्मीनाथ गोसाईं कुटी, सिंहेश्वर शिव मंदिर सहित कई अन्य धार्मिक, पुरातात्विक एवं दर्शनीय स्थल जो कोसी क्षेत्र में अवस्थित हैं का सौंदर्यीकरण कर टूरिज्म का बढ़ावा कोसी क्षेत्र में दिया जा सकता है। बिहार के विभिन्न प्रशासनिक व सरकारी दफ्तर जो मानव पूंजी के अभाव में कछुए की चाल से अपना कार्य कर रहे हैं, में मानव पूंजी की एक बड़ी मात्रा को नियोजित किया जा सकता है। बिहार की इस तृतीयक क्षेत्र से जुड़ी एक प्रमुख समस्या है कि बिहार के युवा सरकारी नौकरी को ही रोजगार मानते हैं नहीं तो वह खुद को बेरोजगार बताते हैं, इसका कारण संभवतः निजी क्षेत्र के रोजगार में असुरक्षा की भावना है अतः आवश्यकता है निजी क्षेत्र के उपलब्ध रोजगार में 'रोजगार सुरक्षा' एवं अच्छी पारिश्रमिक सुविधा सृजन की।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि कोसी क्षेत्र में जो भी समस्याएं हैं वे समाधान योग्य हैं और अगर यहाँ के स्थानीय व राष्ट्रीय नेतृत्व अगर चाहे तो अल्प समय में इन समाधान के दिशा में कार्य कर इसे निष्प्रभावी किया जा सकता है। जैसा कि विश्लेषण उपरान्त ज्ञात होता है, कोसी की संस्कृति कोसी को अतुल्य बनाती और आर्थिक विकास के अवसर भी प्रदान करती प्रतीत हो रही है आवश्यकता है इस अवसर के दोहन की।

सन्दर्भ

1. <https://kosidivision.bih.nic.in/hi/about-department/%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%b8%e0%a5%8d%e0%a4%a4%e0%a4%be%e0%a4%b5%e0%a4%a8%e0%a4%be/>
2. - विकीपीडिया (बिहार बजट विश्लेषण 2022-23)
3. - विकीपीडिया (बिहार बजट विश्लेषण 2016 - 17)